मानसश्री गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
अ.प्र. राजपत्रित अधिकारी
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की-247667 (उत्तराखण्ड)
मोबाइल : 09760111555

आदर्श निर्माण

वास्तुशास्त्र के पीछे पूर्णतः वैज्ञानिक दृष्टिकोंण छिपा हुआ है। इसमें सूर्य की रश्मियों, पृथ्वी के चुम्बकीय क्षेत्र तथा भौगोलिक स्थिति का पूरा-पूरा ध्यान किसी भी निमार्ण कार्य से पूर्व रखा जाता है। निर्माण चाहे झोपड़ी का हो या किसी अट्टालिका का, उद्देश्य यही होता है कि विभिन्न दुष्प्रभाव पैदा करने वाली रेडियो धर्मिता को कैसे दूर किया जाए? जिससे कि भक्त पर आर्थिक, दैहिक तथा आध्यात्मिक सुप्रभाव अधिकारिक हो। यदि निर्माण कार्य होना है तो यही परामर्श दिया जाएगा कि वह वास्तु नियमों के अनुकूल ही हो। परन्तु यदि निर्माण कार्य हो चुका है तो उसके वास्तुदोष निवारण हेतु यथासंभव उपक्रम अवश्य कर लेना चाहिए अन्यथा कम से कम चित्त की शान्ति तो नहीं मिल पाएगी। एक बौद्धिक सलाह यह भी दी जाती है कि परामर्श देने वाला वास्तु पंडित मनोवैज्ञानिक, ज्योतिष, धरती और मिट्टी के वैज्ञानिक परीक्षण करने में निपुण, भौगोलिक स्थिति को ठीक-ठीक

समझ लेने वाला आदि का भी ज्ञाता होना चाहिए ताकि मानव कल्याण के निमित्त बने प्रत्येक घटक का ठीक-ठीक आलंकन वह निर्माण से पूर्व कर सके।

भवन, दुकान, फैक्ट्री, कार्यालय, अस्पताल, रंगशाला, होटल आदि का निर्माण यदि पूर्णतः वास्तु नियमों के अनुसार किया जाता है तो वह स्थान आदर्श माना जाता है। वह एक देव स्थल अर्थात लक्ष्मी-नारायण का मंदिर बन जाता है। ऐसे स्थलों पर निवास करने वाले चिरकाल तक तथा सुख और शान्ति का भोग करते हैं। रोग, शोक आदि विकार उनसे सर्वथा दूर रहते हैं।

एक वर्गाकार भूखंड आदर्श माना गया है। इसमें यदि चारों ओर स्थान छोड़ कर निर्माण किया गया हो तो वह सर्वोत्तम स्थान बन जाता है। भूखण्ड के पूरब और उत्तर दिशा में जितना अधिक निर्माण से मुक्त रखा जाएगा उतना ही सुप्रभाव वाला वह स्थल माना जाएगा। निर्माण कार्य नैत्रदत्य दिशा में करना चाहिए। श्री लक्ष्मी-नारायण मंदिर स्वरुप ऐसे निर्माण कार्य का वर्णन श्रीमद भागवत में गजेन्द्र मोक्ष संदर्भ में भी दिया गया है।

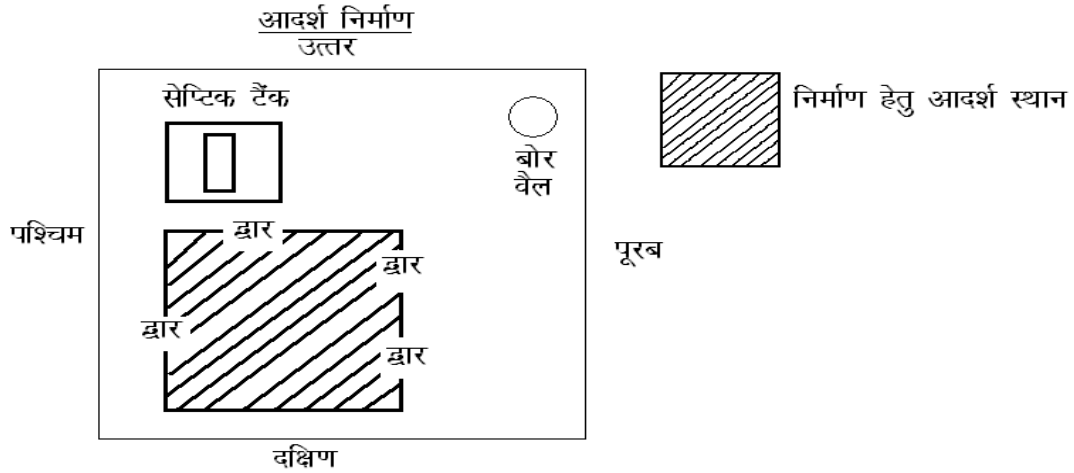

निर्माण के लिए दिशा का चुनाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। भूखण्ड के साथ-साथ उत्तर और दक्षिण समानान्तर रेखा में रखने चाहिए। यदि ऐसा नहीं है अर्थात चित्र के अनुसार

उत्तर-दक्षिण विषम कोंण हैं। अर्थात इन दिशाओं में 90 अंश से कम अथवा अधिक है, तब उन्हें वास्तुनियमानुसार शोधन करके ही निर्माण कार्य सम्पन्न करना चाहिए।

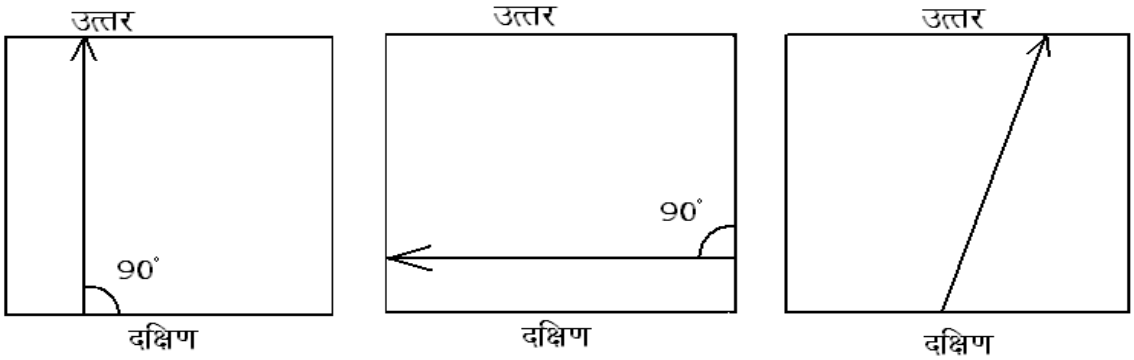

उपरोक्त चित्र के अनुसार भूखण्ड के पूरब तथा उत्तर पूरब में अधिक से अधिक रखें। फूल-फल, बाग, वृक्षादि के लिए भूखण्ड का उत्तरी भाग चुनें। यह सदैव ध्यान रखें कि दक्षिण भाग उत्तरी भाग की तुलना में हल्का सा उँचा हो। शयन कक्ष दक्षिण तथ पश्चिम भाग में रखें। रसोई के लिए भूखण्ड का दक्षिण-पूरब भाग चुनें। यदि भूखण्ड पूर्ण रुप से वर्गाकार है तो निर्माण के लिए निम्न रुप से योजना बनाना सर्वोत्तम सिद्ध होगा।

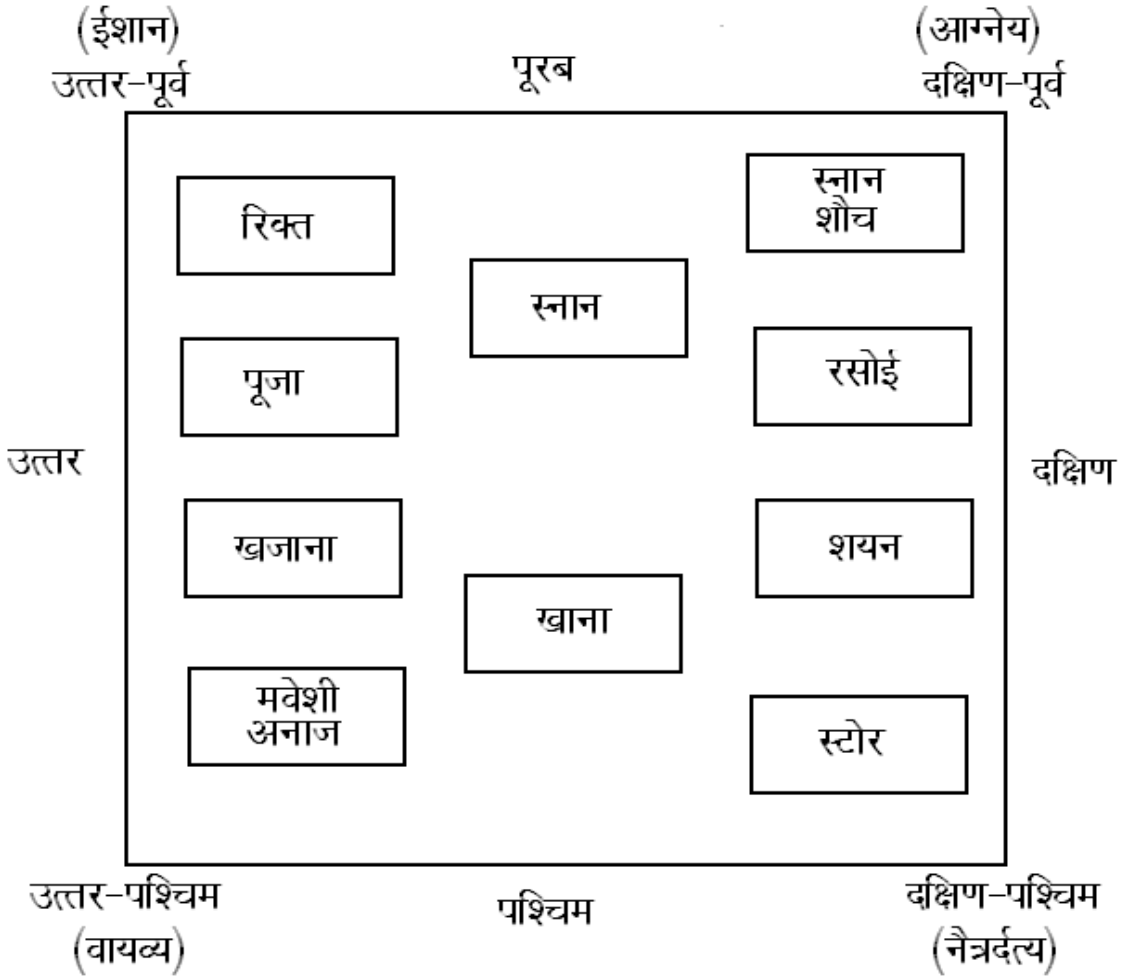

वास्तु मंडल के 81 वर्ग योगिनी निर्माण योजना से पूर्व इसे भलिभॉति समझ लेना आवश्यक है। वास्तुशास्त्र में यह बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वस्तुतः 81 योगिनी वास्तुमण्डल ही आदर्श निर्माण का आधार है। निम्न चित्र को ध्यान से देखें। रुप रेखा से निर्माण का आधार आपको स्वतः स्पष्ट होने लगेगा।

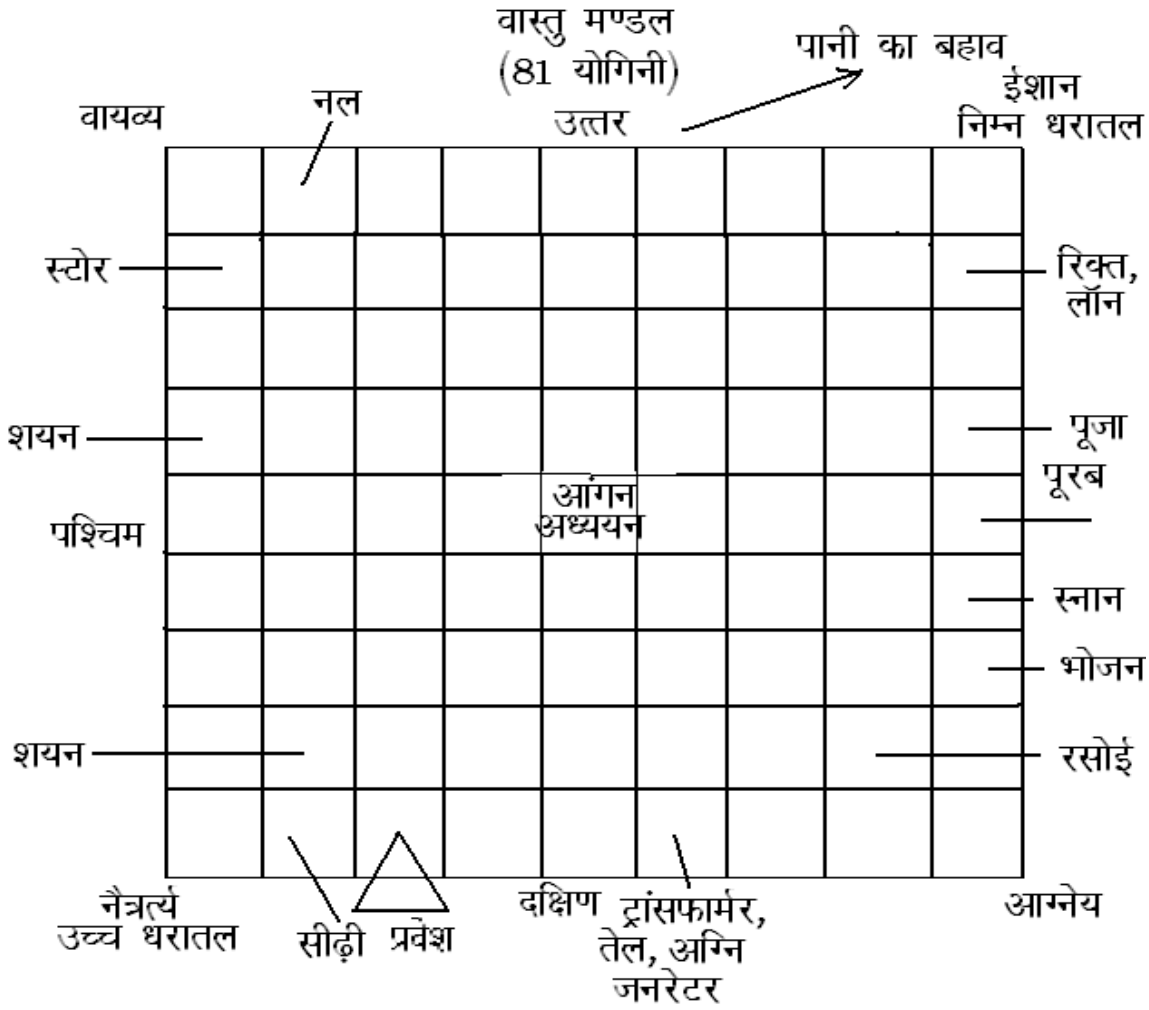

वास्तुशास्त्र में ईशान को स्वर्ग की संज्ञा दी गयी है। इसलिए भवन का पूजा ध्यान कक्ष इस भाग में बनाना चाहिए। रसोई दक्षिण-पूरब अथवा उत्तर-पश्चिम दिशा में शुभ रहती है। परन्तु रसोई में स्थित स्टोव, हीटर, गैस, ओवन आदि का मुह पूरब दिशा की ओर रहना चाहिए। खाना बनाने वाले का मुह ठीक पूरब दिशा में होना चाहिए। दीवार में लगाने वाले रैक ऐसे हो कि वह दक्षिण अथवा पश्चिम दिशा में रहें। उत्तर अथवा पूरब दिशा में रसोई घर की सामग्री न रखें।

पश्चिम दिशा अंधकार की द्योतक है और वरुण को इंगित करती है। दक्षिण दिशा मृत्यु के देवता यम की द्योतक है। दक्षिण-पश्चिम दिशा पूर्वजों अर्थात् पितृों की कारक है। यह कोना वास्तु पुरुष के चरणों को दर्शाता है। शयन कक्ष के लिए इसलिए इस स्थान का

चयन सर्वोत्तम है। ईशान विदिशा में शौचालय अथवा मूत्रालय कभी नहीं बनवाने चाहिए। इस कोनें में शयन कक्ष भी अशुभ सिद्ध होता है। भवन का मध्य भाग अर्थात् केन्द्र ब्रम्ह स्थल कहलाता है। आज भी अनेक घरों में केन्द्र बिन्दु पर तुलसी का पेड़ देखने को अवश्य मिल जाएगा। यहॉ संध्या काल में दीपक जला कर पूजा अर्चना करना सर्वविदित है। उद्देश्य यही है कि ब्रम्ह स्थल की शुद्धता वाली गरिमा बनी रहे।

संक्षिप्त में इस तरह समझ लीजिए कि शयन के लिए दक्षिण और पश्चिम दिशा, रहने के लिए दक्षिण दिशा, खाने और रसोई के लिए उत्तर और पूरब दिशा आदर्श निर्माण है। घर में ऊपर चड़ने की सीढ़ियां इस प्रकार बनें कि उनका मुॅह सदैव पूरब और पश्चिम दिशा में रहे। अर्थात व्यक्ति पूरब अथवा पश्चिम दिशा की ओर मुॅह करके चढ़े। सीढ़ी का मुह उत्तर दक्षिण विदिशा की ओर कदापि नहीं होना चाहिए क्योंकि इस दिशा को रात्रि और मृत्यु का प्रतीक माना गया है।

मानसश्री गोपाल राजू (वैज्ञानिक)
(राजपत्रित अधिकारी) अ.प्रा.
ज्योतिष अनुसंधान केन्द्र
30, सिविल लाईन्स
रूड़की 247667 (उ.ख.)
फोन : (01332) 274370
मोः 09760111555
website : www.astrotantra4u.com
E-mail:gopalraju12@yahoo.com